ॐ नमः श्रीनटेश्वराय ।

नान्दी गीत ॥ चौ ॥

प्रथमहि सुमरओ गुरु गणेश ।
देथु अभय वर हरथु कलेश ॥
कर तिरशूर डमरु मणि हार ।
प्रेम धरिअ शिव अरधङ्ग दार ॥
नंदि भृङ्गि सङ्गे गिरित विहार ।
ओढ़ि इसर, सुंदर बाघ छाल ॥
चाँद तिलक जटा निरमल गङ्ग ।
त्रिभुवन ठाकुर भूषण भुजङ्ग ॥
तोहहि सोहाओन मोर मने भाव ।
जगत प्रकाश भूप कौतुके गाव ॥

(श्लोकः)

तनुताम्रदीधितिजटाग्रपल्लवो, धृतबालभालविधुपुष्पमालकः ।
हरमौलिमङ्गलघटो घटेत वः कुशलाय गाङ्गजलपूरपूरितः ॥

(सूत्र-प्रवेश)

(भवहि भैरव, मा)

राग नाट ॥ जति ॥

जय जय जननि करहु कल्यान ।
सुर नर का तोहरे पय ध्यान ॥
बहुविध शस्त्र अस्त्र धर माता ।
तोहहि एक अभय वर दाता ॥

प्रथमहि सूत्रधार परवेश ।
देंग्रधु प्रभव दुर होग्र कलेश ॥
जगत प्रकाश देवि पद सारे ।
नाट रागे गावए इ जति ताले ॥ २॥

(पुष्पाञ्जलि श्लोकः)

चञ्चद्भारखर्व्वीभवदधिकफणाव्यप्रदर्व्वीकरेशं,
श्वासास्तव्यस्तपङ्केरुहभवनकरव्यस्त¹शस्त्राक्षसूत्रं ।
स्फूर्जद्वेतालतालं विकटगणयुतं चण्डिकाचण्डहासं,
पायाद्भूवतानपायात्त्रिपुरपुरभिदस्ताण्डवाडम्बरं वः ॥

सूत्र०—हे प्रिये ! एतय ग्राउ ।

(नटी तिपनवुहाय)

नाथ ! मोर नमस्कार, कथोने कारणे बोलवला ।

सूत्र०—हे प्रिये ! राजाक ग्राज्ञा भयल, भगवतीक महोत्सव प्रभावती-हरण नाम नाटक नाचय ग्रादेश भेलछ।

नटी—हम नहि जानयी छाँह कउन राजाक ग्राज्ञा ।

सूत्र०—प्रिये ! ग्रवधारण कह। राजाक वर्णना सुनु ।

(सुश्लोकि राज-वर्णना)

(ज्याडा मा)

राग कौशिक ॥ चो ॥

रविकुल कमल विकास दिनेश ।
उगल जगत परगास नरेश ॥
दुरजन तिमिर दुरहु दुर गेल ।
धरम करम ग्रति उपचित भेल ॥

१. पाण्डुलिपि मे 'शुस्त' अछि ।

हरषित लोक शोक¹ नहि काहु ।
वरिसय धन जनि घन वरिसाहु ॥
केग्रो बोल राम, केग्रो बोल काम ।
काहुक मन पुहवी हिमधाम ॥
चंद्रावति पहु पद्मावतिदयि कन्त ।
तसु जस पुरल सकल दिगन्त ॥
भनयि वंशमणि मते गुणि सार ।
करि वलि राय कर्ण ग्रवतार ॥

एहन राजा श्री श्री जगत्प्रकाश मल्ल ।

नटी— हे प्राणनाथ ! हमे जानल, रघुवंशावतार श्री श्री जगज्ज्योतिर्मल्लक दूसर धर्मावतार, श्री श्री नरेशमल्ल देवक हृदयानन्दन, राजाधिराज श्री श्री जय जगत्प्रकाश मल्ल देव, जन्हिके राजधानि शतहु मुखे कहय नहि पारि, तथापि किछु मोय कहैछय्, ग्रवधान कर ।

सूत्र०—प्रिये ! कहु ।

(नट्युक्त देश वर्णना)

(सप्तन्नेथ मा)

उत्तम देश भगतपुर नाम ।
देखितहु सबका भेल ग्रभिराम ॥
ग्रादि जननी ताहा करथि निवास ।
सबहु लोके कएल तन्हिके ग्रास ॥
लोक ग्रछय एतय निक जाति ।
इन्द्रपुरि सत्रे इ देश भल भाति ॥
जगत प्रकाश नृपति एह भान ।
चण्डि चरण छाडि¹ ग्रान नहि जान ॥

१. छाडि ।

हे नाथ ! एहन राजाक राजधानि ।
सूत्र०—प्रिये ! प्रभावतीहरण नाटक अभिनय करु ॥
नटी— प्रभु ! भल कहल । हे नाथ ! बहाय प्रद्युम्न हम प्रभावती, काछय चरु ॥

(सूत्र निस्सार)

(उधोतुम मा)

मल्लाल ॥ लर्ज्जति ॥

हमे होयब कन्दर्प तोहे होउ प्रभावती
सेहे दुहु का छेकल साज ॥ध्रु०॥
अनेक मुनि मिलि रहु धाम ।
इ सबक मन करु अभिराम ॥

(प्रथम कोणे)

सूत्र०—हे प्रिये ! प्रद्युम्न काछय, जाय चरु ।
नटी— नाथ ! अवश्य ।

(द्वितीय कोणे)

नटी— हे नाथ ! बहाय कृष्णक संग प्रवेश करु, हमे वज्रनाभ संगे प्रवेश करब ।
सूत्र०—प्रिये ! अति उत्तम ॥ लु० ॥

(कृष्णादि प्रवेश)

(जासि मा)

(राग मल्लारी ॥ अस्तारा ॥

पीत वसन वर चारि करे ।
शंख चक्र गदा पदुम धरे ॥
सुत दार सहित कयल परवेश ।
देल अभए दुर कयल कलेश ॥

जगत प्रकाश नृपति एहो गाय ।
मोरा मन विष्णु चरण पए भाव ॥

कृष्ण—हे रुक्मिणी, सत्यभामा, गद, सारण, प्रद्युम्न, शाम्ब ! हमर कथा सुनु ।
सर्व्वे—जगदीश्वर ! आज्ञा करु ।
कृष्ण—(श्लोक)

आतोऽहंवसुदेवसूनुरमरप्रीत्यै धरित्रीतले,
दृप्यद्-दानवकोटिसंगरकलाखण्डितखर्वेतण्डिकः ।
सोऽहं सम्प्रविशामि रङ्गसदनं मङ्गल्यकारी सताम्-
रसाहं जनयन्नपूर्व्वरचनाचित्रैश्चरित्रैरति ॥

हे लोके ! एहन कृष्ण हमे ।
सर्व्वे—ईश्वर ! सत्य ।
रुक्मिणी—हे नाथ ! हमर गोचर सुनु ।
कृष्ण—प्रिये ! कहु ।

(श्लोक)

रुक्माङ्गी रुक्मिणी रुक्मिभगिनी भाग्यशालिनी ।
रङ्गमण्डपमाविश्य हरामि हृदयं हरेः ॥

हे नाथ ! एहन रुक्मिणी हमे ।
कृष्ण—प्रिये ! सत्य ।
सत्यभामा—हे ईश्वर ! हम किछु गोचर करै छी ।
कृष्ण—प्रिये ! कहु ।

(श्लोक)

अभग्नसत्या भुवि सत्यभामा रामावलीनामुपरिस्थिताहम् ।
संप्राप्य भर्त्तारमुपेन्द्रमिन्द्रदर्पापहं रङ्गगृहं विशामि ॥

हे प्रभु ! एहन सत्यभामा हमे ।
कृष्ण—प्रिये ! सत्य ।
गद—हे प्रभु ! हमहु किछु कहब ।
कृष्ण—गद ! कहु ।।

(श्लोक)

गदो गदाधरस्याहं मनुजो दनुजान्तकः ।।
सम्विशामि मुदा रङ्गमनङ्गशुभगाकृतिः ।।

हे ईश्वर ! एहन गद हमे ।
कृष्ण—गद सत्य ।
सारण—हे ईश्वर ! हम किछु गोचर कहै छी ।
कृष्ण—सारण ! कहु।

(श्लोक)

जगत्त्रितयनाथस्य   कृष्णस्याहमिहानुगः ।
प्रविशामि दिशामीशानधरीकृत्य सारणः ।।

हे ईश्वर ! एहन सारण हमे ।
कृष्ण—सारण ! सत्य ।
प्रद्युम्न—हे तात ! हमरो विनति सुनु ।
कृष्ण—वत्स ! कहु ।

(श्लोक)

दर्पकोऽहं शम्बरस्य दर्पहा रतिवल्लभः ।
विशामि रङ्गभवनं, देवकीसूनुनन्दन. ।।

हे तात ! एहन प्रद्युम्न हमे ।
कृष्ण—पुत्र ! सत्य ।
शाम्ब—हे प्रभु ! हमर विनति सुनु ।
कृष्ण—शाम्ब ! कहु ।

(श्लोक)

यदुवंशावतारस्य,   विष्णोर्हं देवनन्दनः ।
निविशेऽहं मुदा रङ्गे शाम्बो जाम्बवतीसुतः ।।

हे ईश्वर ! एहन शाम्ब हमे ।
कृष्ण—ई निश्चय ।
कृष्ण—हे लोके ! अनेक विश्राम करु ।
सर्व्वे—ईश्वर ! जे आज्ञा ।
कृष्ण—हे लोके ! उपवन जायब चरु ।
सर्व्वे—ईश्वर ! अवश्य ।

(कृष्णादि निस्सार)
(हथ न कर मा)
कोदाव ।। कामोद ।। चो ।।

आनन्द भेल हमरे, जायब कदम तले । देखब उपवने ।। ध्रु ।।

(प्रथम कोणे)

हे लोके ! केलि कानन चलु ।
सर्व्वे—ईश्वर ! जे आज्ञा ।

(द्वितीय कोणे)

कृष्ण—हे गद, सारण, प्रद्युम्न, शाम्ब ! राज्यक चिन्ता करु ।
गदादि—जे आज्ञा ।

(गद प्रद्युम्न शाम्ब निस्सन विहाय)

रुक्मिणी तथा सत्य भामा—हे प्रभु ! त्वराय, उपवन विजय करु ।
कृष्ण, उत्तम, चलु ।।तुर ।।
(कृष्ण रुक्मिणी, सत्यभामा दबलनहुँ हाथ ।)

(प्रथम कोणे)

कृष्ण—हे प्रिये ! उपवन दर्शन उत्कंठा होंचि छि ।

रुक्मिणी, सत्यभामा—उपवन एहन रमणीय ।

(द्वितीय कोणे)

रुक्मिणी सत्यभामा—उपवन एहन रमणीय ।

(द्वितीय कोणे)

रुक्मिणी सत्यभामा—हे प्रभु ! प्रयान करु ।

कृष्ण—हे प्रिये ! उपवन रमणीय ।

रुक्मिणी, सत्यभामा—अवश्य ।

कृष्ण—हे प्रिये ! उपवन कहने रमणीय ।

रुक्मिणी सत्यभामा—अतिरमणीय सोय ।

कृष्ण—हे प्रिये ! विश्राम करु ।

रुक्मिणी सत्यभामा—नाथ । भल !

कृष्ण—प्रिये ! हमर कहिनी सुनु ।

रुक्मिणी सत्यभामा—ईश्वर ! जे आज्ञा ।

(कृष्णक शृङ्गार ।। ज्याङ्का मा ।।)

का ती, भूपा, पहु ।। प्र ।।

अपरुब रमणी तुअ मुख चंद ।
सेहे देखि मोर उपजल आनन्द ।।
सुन्दरि तोहे कर एक परकार ।
मदन वेआधि सत्रे जे हो संतार ।।
विहुसि करहु हम सत्रे सदभाव ।
अधिक माने इस किछु नहि पाव ।।
जगतप्रकाश भन मानवती ।
माने मारहु जनु तोहे निजपती ।।

हे प्रिये ! हमर मदन ताप दूर करु ।

रुक्मिणी सत्यभामा—हे प्रभु ! हमर किछु गोचर सुनु ।

कृष्ण—प्रिये कहु ।।

(ऊजो मध जनितहु, मा)

मालव ।। चो ।।

तोहे पहु सुन्दर नयन कमल दल, तोर रूप मदन समाने ।
सुनहु हमर मति आन नहि भोल गति, पिया लागि अलप पराने ।।
हमे नहि सुन्दरि छिन मति नागरि, रति रङ्ग किछु नहि जाने ।
मधुर वचन सुनि अयलहु सदन तुअ मुदित करहु मधुपान ।।
तोहर अधिन हमे आज सुदिन भेल, दरशन पाओल तोर ।
हरल अनेक दुख विहि मोहि देल सुख, निते सेओब पद जोर ।।
नरेश नृपति सुत प्रकाश मल्ल भूप, ई रस कौतुके भान ।
देव सेवा विनु किछु नहि पाविअ, मोर मन एहि पब जान ।।

सुनु पहु रसिया रे ।। ध्रु ।।

हे नाथ ! हमरा इछा बिनु गति नहि ।

कृष्ण—प्रिये ! एहने ।

कृष्ण—हे प्रिया लोके ! अन्तपुर जाए रहु ।

रुक्मिणी सत्यभामा—जे आज्ञा ।। नु ३ ।।

(इन्द्र, जयन्त, हंस, हंसी प्रवेश)

(भीम अर्जुन मा)

(वसन्त ।। रूपक ।।)

देवराज सब देवक ठाकुर ।
जे माग जे बल,[1] से देथ पूर ।।
सिर मुकुट धरि परवेश देल ।

---

१. बर ।

रङ्ग भूमि देखि आनन्द भेल ॥
जयन्त हंसि संगे भेलहु सुसोभ ।
अमरावतिक उपर कए लोभ ॥
जगत प्रकाश नृपति एहो भान ।
काम अरिक पद कए अवधान ॥

इन्द्र—हे जयन्त, हंस, हंसी ! हमर बोल सुनु ।
सर्व्वे—देवराज कहु ।

(श्लोक)

पुलोमजाप्राणपतिर्व्वलस्य भेत्ता, भवानीपतिभक्तियुक्तः ।
विशामि रङ्गाङ्गनमस्तजंभोदम्भोलिभृत्सर्वसुपर्व्वराजः ॥

हे लोके ! एहन इन्द्र हमे ।
जयन्त—तात ! एहने ।
जयन्त—हे तात ! हमरो किछु गोचर सुनु ।
इन्द्र—वत्स ! कहु ।

(श्लोक)

दृप्तदानवकुलस्य दर्पहा पाकशासनिरहं महाबलः ।
सर्व्वदेवगणसेवितो मुदा सम्विशामि वररङ्गमन्दिरम् ॥

इन्द्र—वत्स, सत्य ।
हंस—हे देवराज ! हमर किछु गोचर सुनु ।
इन्द्र—पक्षिराज ! कहु ।

(श्लोक)

राजहंसकुले जातः पाकशासनसेवकः ।
विशामि मुदितो रङ्गं मरालकुलसेवितः ॥

हे देवराज—एहन आज्ञाकारि सेवक हमे ।
इन्द्र—पक्षिराज ! एहने ।

हंसी—हे देवराज ! हमरो विनति सुनु ।
इन्द्र—हंसी ! कहु ।

(श्लोक)

अहं शुचिमुखी हंसी भ्रमन्ती भुवनावलीः ।
विशामि रङ्गसदनं मदनप्रियकारिणी ॥

हे देवराज ! एहन शुचिमुखी हंसी हमे ।
इन्द्र—हंसी ! सत्य ।
इन्द्र—हे जयन्त हंस, हंसी ! किछु काल विश्राम करु ।
सर्व्वे—प्रभु ! जे इच्छा ।
इन्द्र—हे जयन्त, हंस, हंसी ! नन्दन वन चलु ।
सर्व्वे—देवराज ! अवश्य ।

(इन्द्र निस्सार)

(जुनिया मा)

सारङ्गी तोड़ि ॥ पो ॥

चलि जाउ जयन्त वेगे अमरावती ॥ ध्रु ॥
हम सब दुख देल वज्रनाभ असुरे ।
कतने जतने हंसी पठाए कहु एकर जीव करब दूरे ।
हे जयन्त ! नन्दन देखय जायब ।
जयन्त—तात ! भल ।

(प्रथम कोणे, द्वितीय कोणे)

इन्द्र—हे हंस, हंसी ! इहार तिनि व्यक्ति, वज्रपुर गए वज्रनाभ मारे
लाइ, प्रभावती प्रद्युम्न मिलाउ, हमर कार्य करु ।
हंस—देवराज ! जे आज्ञा ।

(हंस, हंसी, दवलन विहांय)

जयन्त—हे तात ! हमरा नन्दन वन विजय करु ।

इन्द्र—जयन्त ! अवश्य ॥ लु ४ ॥

(परशिव भा)

बलालि ॥ प्र ॥

देल वर पितामहे पाओल हमे ।
तेहि बले जिनल भुवन तिनि हमे ॥
वज्रनाभ नाम दानव भेल ।
आनन्द सकल असुर जन देल ॥
मोर बल सुरमुनिगण हो मलाने ।
के होएत दोसर हमर समाने ॥
कौतुके गावए जगतप्रकाशे ।
गुणि जन मन होअ अधिक उलासे ॥

वज्रनाभ—हे प्रेमवती, सुनाभ, सुनीति, प्रभावती, चन्द्रावती, गुणवती मत्त ! हम किछु कहै छह सुनु ।

सर्व्वे—दैत्यराज ! आज्ञा करु ।

(श्लोक)

सदावलम्ब्यवकुलपद्मनाभः सवज्रनाभो हृतवज्रिगर्व्वः ।
विशाम्यहं वज्रपुरीनिवासो नटालयं त्रस्तसमस्तदेवः ॥

हे लोके । एतादृश वज्रनाभ हमे ।

सर्व्वे—दैत्यराज ! एहने ।

प्रेमवती—हे नाथ ! हमहु किछु विज्ञप्ति करै छह ।

वज्र—प्रिये ! कहु ।

(श्लोक)

दानवेन्द्रपदद्वन्द्वसेवया हृतकिल्बिषा ।
विशामि रङ्ग-सदनं नाम्ना प्रेमवती प्रिया ॥

हे नाथ ! एहन प्रेमवती, इहाक ।

वज्र—प्रिये ! सत्य ।

सुनाभ—हे दानवेन्द्र ! हमर वचन सुनु ।

वज्र—सुनाभ ! कहु ।

(श्लोक)

समस्तदेववृन्दानां दर्पसंदोहदारकः ।
वज्रनाभानुगो रङ्गं सुनाभः संविशाम्यहम् ॥

हे दैत्यराज ! एतादृश सुनाभ हमे ।

वज्र—सुनाभ ! उचित ।

सुनीति—हे प्रभु ! हमर वचन अवधान करु ।

वज्र—सुनीति ! कहु ।

(श्लोक)

सुनीतिर्मन्त्रिराजोऽहं नीतिस्यवज्ररभार्गवः ।
नटालयं संविशामि, दुष्टदानवसेवितः ॥

हे प्रभु ! एहन सुनीति मन्त्रिराज हमे ।

वज्र—मन्त्री ! सत्य ।

प्रभावती—हे तात ! हमर विज्ञप्ति सावधान करु ।

वज्र—पुत्रि ! कहु ।

(श्लोक)

प्रभावती प्रभावती रतीशरङ्गदायिनी ।
जगत्त्रयैकनागरी विशामि रङ्गमण्डपम् ॥

हे तात ! एहन प्रभावती हमे ।

वज्र—पुत्रि ! एहने ।

चंद्रावती—हे दैत्यराज ! हम किछु कहैछ ।

वज्र—चंद्रावति ! कहु ।

(श्लोक)

अहं चन्द्रावती नाम्ना सुनाभतनयोत्तमा ।
रङ्गाङ्गनं समायामि कामिनीमौलिमण्डनम् ॥

हे दैत्यराज ! एहन चन्द्रावती हमे ।

वज्र—चन्द्रावती, सत्य ।

गुणवती—हे दैत्येन्द्र ! हमर वचन सुनु ।

वज्र—गुणवती ! कहु ।

(श्लोक)

अहं गुणवती कन्या स्वर्गकन्या गुणोत्करैः ।
रङ्गस्थानमुपायामि कामकेलितरङ्गिणी ॥

हे महाराज ! एहने गुणवती हमे ।

वज्र—वत्से ! सत्य ।

मत्त—हे महाराज ! हमहु कहब ।

वज्र—मत्त ! कहु ।

(श्लोक)

मत्तो दानवराजस्य वज्रनाभस्य सेवकः ।
देवकम्पकरो नित्यं नृत्यस्थानमुपाश्रये ॥

हे प्रभु ! एहन मत्त नाम हमे ।

वज्र—मत्त, सत्य ।

सखी—रानी, हमर गोचर सुनु ।

रानी—सखी कहु ।

(श्लोक)

केशसंस्कारकुच्चाङ्गवेशविन्यासपेशला ।
विशामि रङ्गसैरंध्री, पुरंध्रीणां रहः सखी ॥

हे रानी ! एहन सैरंध्री हमे ।

रानी—सैरन्ध्री ! सत्य ।

वज्र—हे लोके ! मुहुर्त्त विश्राम करु ।

सर्व्वे—दैत्यराज ! सर्व्वथा ।

वज्र—हे लोके ! सरोवर निकट सभा जायब ।

सर्व्वे—महाराज ! अवश्य ।

(वज्रनाभ विस्तार)

(ववित्रि मा)

पहड़िया ॥ मालव ढ ॥

चलहु जायब लोके सभा हमरे ।
अनेक दुख देल हमे सकल अमरे ॥

(प्रथम कोपी)

वज्र०—हे लोके ! सभा जायब ।

सर्व्वे—दैत्यराज ! अवश्य जायब ।

(द्वितीय कोपी)

प्रभा०—हे तात ! हमर प्रणाम, अपन स्थान जाथि छि ।

वज्र०—पुत्री ! अवश्य ।

(प्रभावती, सखी, इत्यादि विहाय)

सुनाभ—हे दैत्यराज[1] ! त्वरित विजय करु ।

वज्र०—सुनाभ ! चलु[2] ॥ तु ५ ॥

(हंस, हंसी, पंतारण इहाय)

(बंधु, बंधु मा)

सारङ्गी ॥ भय्यारि ॥ चौ ॥
जाए देखब दैत्यराज समाज ।

---

१. पाण्डुलिपि मे 'दैराज' पाठ अछि ।
२. पाण्डुलिपि मे 'चर' पाठ अछि ।

अवस करब हमे वासवक काज ॥
लहु लहु जाएब मय ॥ ध्रु० ॥

(प्रथम कोणे)

हंस—हे हंसी ! हमे वज्रनाभक निकट जायब ।
हंसी—हे नाथ ! इन्द्रक कार्ज करु ।

(द्वितीय कोणे)

हंसी—हे नाथ ! सरोवर चरु ।
हंस—अवश्य चरु ।
हंस—हे हंसी ! क्षनेक विश्राम करु ।
हंसी—नाथ ! अवश्य ।
हंस—हे हंसी ! बड़ अभिराम सरोवर ।
हंसी—नाथ ! बड़ रंगस्थान ।
हंस—हे हंसी ! हमर वचन सुनु ।
हंसी—नाथ ! कहु ।

(देखिया मा)

काफी, मारुवा ॥ चो ॥

देख तोहे एहे सरोवर के शोभा ।
मोर मन भेल दुहु खेलए के शोभा ॥
कमल दल खेल चकेवा जोर ।
से देखि मदन मनोरथ मोर ॥
निरमल घनरस ई परिपूर ।
धिरे आब मारुते सुरभि सुशीतले ॥
ए सबे हमे तोर अधिन कय देल ।
नाथ रूप देखि मानओ तेजि गेल ॥

जगत प्रकाश नृपति एहो भाखय ।
शुचिमुखि हंसि हंस रस राखय ॥
हे नाथ ! हमे इहाक अधीन ।
हंस—हे प्रिये ! बड़ उत्तम स्थान, ई सरोवर, एतय रहु ।
हंसी—नाथ ! अवश्य ।

(वज्रनाभादि दयत्न दुहाय)

(प्रथम कोणे)

वज्र०—हे सुनाभ ! सरोवर आयब चरु ।
सुनाभ—वज्रनाभ ! अवश्य ।
वज्र०—हे सुनाभ ! सरोवर देखि मन उल्लास बड़ भेल, एहि धाम विश्राम करु ।
सर्व्व—प्रभु ! उत्तम ।

(विश्राम बाद)

वज्रनाभ—हंस ! आश्चर्य न सोच ।
वज्र०—हे हंस हंसी ! इहा तोनिहु व्यक्तिक अपूर्व रूप, अद्भुत स्थान, सुन्दर बाजब, कतय सय आयल छि, सुनु ।
हंस—दैत्येन्द्र ! कहु ।

(वज्रनाभोक्ति दण्डक)

(कान कुंडल मा)

गौड़ी ॥ प्र० ॥

कतय सों आयल ई सरोवरे,
तोहे हंसि हंस मिलि के ॥ ध्रु० ॥
किए आएलाह तोहे मोर ई राजे ।
कह तोर भेल की काजे ॥ मेभासा ॥

हे हंस ! कओन काजे एतय आयला हे ।
हंस—हे दैत्येन्द्र ! जे आयलाहु से सुनु ।
वज्र०—हंसी ! कहु ॥

(हंसोचित दण्डक)

तोर नगर देखय के अभिलाखे ।
ते अयलहु ई कामे ।। ध्रु० ।।
देखय देह तोहे ई वज्रपुर ।
हमारा मन का आसा पूर ।। भैभास ।।

हे दैत्येन्द्र ! हमरा इहाक नगर देखय आयलाहु ।

वज्र०—हंसी ! यथेष्ठ देखु ।।

वज्र०—हे लोके ! अपूर्व हंस, हंसी, अति सुन्दर पुर, सब देखु ।

सर्व्वे—दैत्यराज ! अवश्य ।।

(लोप)

सर्व्वे—हे दैत्यराज ! उत्तम कहै छि, अति सुन्दर ।

वज्र०—हे प्रेमवती ! अन्त पुर चलु ।

प्रेमवती—नाथ ! जे आज्ञा ।

(वज्रनाभ हाथ, ववलन विहाय)

(प्रथम कोणे)

वज्र०—हे प्रेमवती ! त्वराय चलु ।

प्रेम०—नाथ ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

प्रेम०—हे दैत्यराज ! शीघ्र विजय करु ।

वज्र०—प्रिये ! चलु ।

हंस—हे हंसि ! हमरा सरोवरे रहु ।

हंसी—नाथ ! अवश्य ।

(हंस, हंसी, परि विहाय ।। सु ।।)

(कृष्ण, रुक्मिणी, सत्यभामा, परिवु हाय)

कृष्ण—हे प्रिये ! खनेक आराम करु ।

रुक्मिणी, सत्यभामा—नाथ ! अवश्य ।

इति प्रथमाङ्कः ।

।। अथ द्वितीय दिवसे ।।

(कृष्ण, रुक्मिणी, सत्यभामा, अलंकारण दुहाय)

कृष्ण—हे रुक्मिणी, सत्यभामा ! खनेक विश्राम करु ।

रुक्मिणी—सत्यभामा ! अवश्य ।

रुक्मिणी सत्यभामा—नाथ ! आज्ञा करु ।

(राग तुमि मा)

विभास ।। प्र ।।

अएलहु सुन्दरि उगल[1] रवी ।। ध्रु० ।।
चकवा चकि का मन, दुर गेल शोक ।।
भेल प्रभात न आयल सुत लोक ।।

कृष्ण—हे प्रिये ! प्रातःकाल भेल, प्रद्युम्न, गद, शाम्ब लोक नहि आयल कि ?

रुक्मिणी सत्यभामा—अयलप्राय ।।

(प्रथम कोणे)

प्रद्युम्न—हे गद, सारण, शाम्ब ! पिताक चरण देखव ।

सर्व्वे—हमरहु एहे मन ।।

(द्वितीय कोणे)

सर्व्वे—हे प्रद्युम्न ! त्वराय चलु ।

प्रद्यु०—गद, शाम्ब ! चलु ।

सर्व्वे—ईश्वर ! हमर प्रणाम ।

कृष्ण—हे लोके ! बैसू ।

प्रद्यु०—अवश्य ।

१. पाण्डुलिपि मे 'उवल' पाठ अछि ।

(कृष्णादि सकलन पिहाय)

हे लोके ! सभा स्थान चलु ।

सर्व्वं—जे आज्ञा ।

(प्रथम कोणे)

कृष्ण—हे लोके ! सत्वर चलु ।

सर्व्वं—नाथ ! विजय कलु ।

(द्वितीय कोणे)

सर्व्वं—हे ईश्वर ! विजय कलु ।

कृष्ण—लोके ! चलु ॥ लु० ७ ॥

(हंस, हंसी, परि कुंहाय)

हंस—हे हंसी ! उपवन देखि रहु ।

हंसी—नाथ ! अवश्य ।

(प्रभावती, सखी, पैसारण कुंहाय)

(कमल नयन मा)

गौड़ी :। चौ ॥

चलह सखि आउ दुहु उपवने ॥ ध्रु० ॥
तोहे हमे देखब, वनक शोभा,
हमरा मन लागल ओतए ।
कमल विपिन देखए के लोभा,
ई अम्बुज पर भमर भए ॥

हे सखी ! सरोवर देखब, चलु ।

सखी—रुक्मिणी ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

सखी—हे प्रभावती ! हमरजे मन सोल्लास भय ।

प्रभा०—हे सखी ! खनेक विश्राम कह ।

सखी—प्रभावती ! अवश्य ।

(सरोवर हंस लोय)

प्रभा०—हे सखी ! कहेन सुन्दर हंसी ।

सखी—चलु संभाषण पुछु ।

प्रभा—सखी ! अवश्य ।

(निकट सबने)

प्रभा०—हे हंसी ! इहाअ अपूर्व देखं छिय, के थिक ?

हंसी—हे कन्या ! हमे हंसी स्वर्गलोक सओं आयल छि, एहाय के थीक,
        ककर पुत्री ?

प्रभा—हे हंसी ! हमे वज्रनाभ दैत्यक पुत्री प्रभावती ।

हंसी—हे प्रभावती ! हमर वचन सुनु ।

प्रभा—भल, कहु ।

(हंस्युक्ति वण्डक)

(कान्हा तोरो, मा)

गौड़ी ॥ सारङ्ग ॥ प्र ॥

सुनु रामा किछु कहिनी मोर,
न होअ पति बिनु रति ॥ ध्रु० ॥
जुवति वयस पिया नहि भेल तोर ॥

हे प्रभावती ! ई तोहर रूप, वयस, स्वामि बिनु निरर्थक ।

प्रभा—हंसी ! सुनु ।

हंसी—प्रभावती ! कहु ।

हमरजे सुनु एक बिनति,
मोय बाला नहि जानो कथा ॥ ध्रु० ॥
हम राखल एहि पुर ए जुगुति,
कर परकार तोहे दूति ।

हे हंसी ! यापे हम अन्तःपुर अवरुद्धि कय लाखल[1] छिअहु, तोहे उपाय कर ।

हंसी—प्रभावती ! सुनु ।

प्रभा—हंसी ! कहु ।

बेखल कृष्ण सुत करहु विचार ।
ओकर होअ तोहे वार ॥

हे प्रभावती ! कृष्णक पुत्र, प्रद्युम्न पुरुष रत्न, जे तोहर उचित स्वामी ।

प्रभा—हंसी ! सुनु ।

हंसी—प्रभावती ! कहु ।

तातक वैरि सौं ई नहि उचीत ।
तोहहि विचार करु नीत ॥

हे हंसी ! हमरा बाप सौं कृष्ण सहज बैर, तन्हिका पुत्र सङ्गे प्रीति उचित नहि ।

हंसी—हे प्रभावती ! हमर बचन सुनु ।

प्रभा—हंसी ! कहु ।

मने जनु शंका करहु तोहे आजे ।
एहे होअ उतम काजे ॥

हे प्रभावती ! कृष्ण त्रैलोक्यनाथ, हुनका पुत्र सञ्जे प्रीति, कओनो शंका नहि, ई कार्य शीघ्र करु ।

प्रभा—हंसी ! सुनु ।

हंसी—प्रभावति ! कहु ।

तोहर कथा सुनि त होअ नाश,
मोए कयल तोहेरे आश ॥

हे हंसी ! इहाक कथा सुनि, बिरह ज्वाला भेल ।

1. 'राखल' ।

हे हंसी ! पुनु हमर निवेदन सुनु ।

हंसी—प्रभावती ! कहु ।

(प्रभावत्युक्ति विरहिणी)
(भइ हथ बाउलि आ)
बेलावल ॥ खर्ज ॥

सुन दूति मोर कहिनि,
पहु बिनु रहय न जाय ॥ तेक साजनि ॥
बिरह दहन तनु तावए मोर ।
इ वेदन दुख मोहि नहि थोर ॥
पिया बिनु हम निवराएल[1] काल ।
करहु दूति मोर जीव उबार ॥
मय कयल एक तोहरे आस ।
अबस होएब हम तोहर दास ॥
भनथि प्रकाश नृप सुनहु दूति ।
कय देहु तोहे पहु मिलन जुगुति ॥

हे हंसी ! कओन उपाय चिन्तु, हमर प्राण इहाक अधीन ।

हंसी—हे राजकन्या ! अञ्‍। इहाप का एहन मन तञे हमर कहिनि बाप के कहु जे तोनि हंसी अनेक कौतुक वार्ता जनैछ, से देखु ।

प्रभा—हे हंसी ! अवश्य बाप के कहब ।

प्रभा—हे हंसी ! ए धाम से चलु ।

हंसी—अवश्य ।

(प्रभावती हंसी स्वलन विहाय)
(प्रथम कोषे)

प्रभा—हे हंसी ! हमे बापक स्थान जायि छव् ।

1. पाण्डुलिपि में 'निएलाएर' पाठ अछि ।

हंसी—प्रभावती ! भल ।

(द्वितीय कोणे)

हंसी—हे प्रभावती ! आन सरोवर जाथि छत् ।

प्रभा—पुनर्दर्शन चाहि ॥ लु ५ ॥

(वज्रनाभादि ववलन दुंहाय)

(प्रथम कोणे)

हे सुनाभ ! सभा गृहे चलु ।

(द्वितीय कोणे)

सर्वे—दैत्यराज ! जे आज्ञा ।
सर्वे—प्रभु विजय करु ।
वज्र०—अवश्य ।
वज्र०—हे लोके ! खनेक विश्राम करु ।
सर्वे—प्रभु ! सर्वथा ।

(प्रभावती पैसार, दुंहाय)

(थिरोविनि मा)

केदारा ॥ चो ॥

घरह हमे आए ॥ ध्रु० ॥
अपुरुब कहिनि लय जायब तात समाज ।
ई कथा कहब मय आज ॥

(प्रथम कोणे)

हे सखी ! तातक निकट जायब ।
सखी—प्रभावती ! नीक ।

(द्वितीय कोणे)

सखी—प्रभावती ! चलु ।
प्रभा०—सखी ! चलु ।

प्रभा०—हे तात ! मोर प्रणाम । हे तात ! अपूर्व एक वार्ता कहब ।
वज्र०—पुत्रि ! कहु ।
प्रभा०—हे तात ! एक हंसी देखलि नाना देशक अनेक वार्ता जनै छइ से भेट ।
वज्र०—हंसी भेटथि ।
प्रभा०—हे तात ! हमे अपन स्थान जाथि छि आज्ञा देश्रो ।
वज्र०—पुत्रि ! जाउ ।

(प्रभावती ववलन विहाय)

(प्रथम कोणे)

प्रभा०—हे सखी ! अपन स्थान चलु ।

(द्वितीय कोणे)

सखी—हे प्रभावती ! त्वराय चलु ।
प्रभा०—सखी ! चलु ।
वज्र०—हे मत्त ! हंसी बजाय देह ।
मत्त—प्रभु ! जे आज्ञा ।

(छकोणसवाडाव सत्तो)

मत्त—हे हंसी ! राजाक निकट जाउ ।

(हंसी ववलन दुंहाय)

(प्रथम कोणे)

हंसी—हमे राजाक निकट जायब ।

(द्वितीय कोणे)

हंसी—हे मत्त ! कथि लागि राजाक आदेश भेल ।
मत्त—राजाक निकट जानय ।
मत्त—हे दैत्यराज ! हंस हंसी आयल ।
वज्र०—हे मत्त ! वोला आनु ।

मत्त—नाथ ! अवश्य ।
मत्त—हे हंस हंसी ! राजाक आज्ञा भेल भीतर आउ ।
हंसी—मत्त ! जे आज्ञा ।
हंसी—हे महाराज ! हमर प्रणाम । की आज्ञा ?
वज्र०—हे हंसी ! किछु कहब सुनु ।
हंसी—दैत्यराज आज्ञा करु ।

(वज्रनाभोचित दण्डक । मदननि मा ।)

मालवा ॥ चौ ॥

कहहु हंसि अपुरुब कहिनि । ध्रु० ॥
अनेक अनेक देश देखल तोहे ।
जे देखि सब जन मोहे ॥ मेभासा ॥

हे हंसी ! इहाय अनेक देश देखलछ, कओनो अपूर्व कथ-कहु ।
हंसी—राजा ! सुनु ।

त्रिभुवन नहि एकर समान ॥ ध्रु० ॥
भद्र नाम नट देखल हमे,
गुणे रुपे सबहि उत्तम ॥ मेभासा ॥

हे दैत्यराज ! भद्र समान नट त्रिभुवन नहि छय ।
वज्र०—हे हंसी ! भद्र नाम नट कतय रहैछ, हमरा भेटय पारथि, इहाहि भेटबियदु ॥
हंसी—अवश्य भेटबबाह, हमे आनय जाथि छव् ।
हंसी—हे हंसी ! राजाक आज्ञाय नट बोलाय आनब ।
हंसी—प्रभ ! अवश्य ।

(हंसादि निस्सार)
(बजुकड़ी नंद कन्हैया मा)
काफी धनाश्री ॥ प्र ॥

चल चल जाएब हमे ॥ ध्रु० ॥

बेगे चलद दामोदर निकट,
लए आनब पलदुमन नट ॥

(प्रथम कोणे)

हंस—हे हंसी ! इन्द्रक आज्ञाय, द्वारिका जायब ।
हंसी—नाथ ! जे आज्ञा ।

(द्वितीय कोणे)

हंसी—नटरूप प्रद्युम्न वज्रपुर आनबाह ।
हंस—हंसी ! अवश्य ।

(वज्रनाभादि सकल निहाय)

हे लोके ! हम अन्तःपुर गय विश्राम करब ।
सबें—दैत्यराज ! भल ।

(प्रथम कोणे)

हे लोके ! एतय सो जायब ।
सबें—दैत्य ! अवश्य ।

(द्वितीय कोणे)

इहाय लोके अपन कार्य करु ।
सबें—जे आज्ञा, हमर प्रणाम ।
चन्द्रावती, गुणवती—हे दैत्यराज ! हमहु प्रभावतीक सग जायब । हमर प्रणाम ।

(सकलेड निहाय)

प्रेमवती—हे प्रभु ! त्वराय विजय करु ।
वज्र०—प्रिये ! चलु ॥ लु१ ॥

(कृष्णादि पैसारण धुं हाय)
(छाबब पंड़ित मा)
गौड़ी कोड़ी ॥ पर्ज ॥

जाओ सबहि मिलि मोर सभा ॥ ध्रु० ॥
थिर जनु करहु सबहि लोके तोहे ॥

ए सभा देखि के नहि मोहे ॥

(प्रथम कोणे)

हे लोके सुधर्मा जाउ ।
सर्वे—ईश्वर ! जे आज्ञा ।

(द्वितीय कोणे)

सर्वे—हे देव ! विजय करु ।
कृष्ण—लोके ! चलु ।
कृष्ण—हे लोके ! खन एक विश्राम करब ।
सर्वे—ईश्वर ! जे आज्ञा ।

(हंस चवलन हुहाप)

(प्रथम कोणे)

हंस—हे हंसि ! कृष्णाक निकट जायब, चलु ।
हंसी—नाथ ! विजय करु ।

(द्वितीय कोणे)

हंसी—हे नाथ ! इन्द्रक कार्य भेल ।
हंस—प्रिये ! सत्य ।
हंस—हे ईश्वर ! हमर प्रणाम । हे त्रैलोक्यनाथ ! हमरा विज्ञप्ति सुनु ॥
कृष्ण—हंस कहु ।

(हंसुक्ति वन्दक)

(न कन नर महो तो. मा)

काफी धनाश्री ॥ खर्ज ॥

वासवे पठाओल हमे तोहर ठाम,
सुन सुनु विनति हमर तोहे ॥ ध्रु० ॥

देवक देल दुख अधम दानवराज ।
देवसुत दधितक करहु दलन आज ॥ मेभास ॥

हे ईश्वर ! आन पुत्र पठाए, वज्रनाभ मारि देवकाज करु । ई इन्द्र विनति कयल ।
कृष्ण—हे हंसी ! हमर कहिनि सुनु ।
हंसी—देव ! आज्ञा करु ।
कृष्ण—अवस देव हमे स्वपुत्र सहाय ।
लहु लहु जाइ जनु हंसि तोहे ॥ ध्रु ॥
नट रुप लय जाइ तोहे सब सत लोक ।
अनेक देवका दुर होए मन शोक ॥ मेभास ॥

हे हंसी ! हमर पुत्रलोक नट रुपे लय जाइ, तेहि देव कार्य करवाइ
हंसी—देव ! अवश्य ।
कृष्ण—हे प्रद्युम्न, गद, शाम्ब ! इहाय नट रुपे हंसी संगे वज्रपुर जाउ, देवकार्य करु ।
सर्वे—ईश्वर ! जे आज्ञा, हमर प्रणाम ।
हंस—हे प्रद्युम्न, गद, शाम्ब ! थिर जनु करु, शीघ्र विजय करु ।
सर्वे—हंस ! चलु ।

(हंसादि नटरूप, चवलन पिहाप)

(प्रथम कोणे)

हंसी—हे प्रद्युम्न ! वज्रपुर चलु ।
सर्वे—हंसी ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

प्रद्युम्न—हे हंस ! वज्रपुर त्वराय चलु ।
हंसी—प्रद्युम्न ! विजय करु ।
कृष्ण—हे रुक्मिणी, सत्यभामा ! इहाय एतय लहु, हमे वज्रपुर जायब ।
रुक्मिणी सत्यभामा—ईश्वर ! जे आज्ञा, हमर प्रणाम ।

(कृष्ण सारण दुहुजन विहाय)

(प्रथम कोणे)

कृष्ण—हे सारण ! हमहु संग्राम देखय वज्रपुर जायब ।

सारण—ईश्वर ! उचित ।

(द्वितीय कोणे)

सारण—हे ईश्वर ! सत्वर विजय करु ।

कृष्ण—सारण ! चलु ।

रुक्मिणी—हे सत्यभामा, अन्तःपुर भय रहु ।

सत्यभामा—रुक्मिणी ! अवश्य ।

(रुक्मिणी, सत्यभामा परि विहाय) ॥ लु१० ॥
वज्रनाभ प्रेमवती, पैसारण दुहाय)

(नयना नयन कि मा)

काफी ॥ परिमाण ॥

जायब शृंगारपूर, एतय सो नहि दूर ।
करब काम रङ्ग, आज तोहर सङ्ग ॥

(प्रथम कोणे)

हे प्रिये ! शृंगारपुर जायब, चलु ।

प्रेमवती—नाथ ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

प्रेमवती—हे प्रभु ! त्वराय विजय करु ।

वज्र०—प्रिये ! चलु ।

वज्र०—हे प्रिये ! ए धाम विश्राम करु ।

प्रेमवती—प्रभु अवश्य ।

वज्र०—हे प्राणप्रिये ! हमर बोल किछु सुनु ।

प्रेमवती—प्राणनाथ ! कहु ।

(वज्रनाभोक्ति शृंगार)

(राज सेवके विप्र, मा)

पहड़िया मालव ॥ काफो ॥ चो ॥
जोवन समय रहय दिन चारि ।
मदन ताप दुर कर वरनारि ॥
अधर विम्ब तोर तनु सुकुमारि ।
विनु दोषे कुसुम[1] चापहि मारि ॥
एहि वेदन मोहि वसुधा पारि ।
पति वध जनु अँगिरह अवधारि ॥
जगत प्रकाश नृपति रस गाव ।
जे होअ रसिक सेहे रस पाव ॥

हे प्रिये ! तोहर ई रूप देखि अति मुग्ध भेल ।

(प्रेमवत्युक्ति शृंगार)

हे प्राणनाथ ! हमे किछु विज्ञप्ति करै छत् ।

वज्र०—प्रिये कहु ।

(मालिनि के अङ्गना, मा)

मालव ॥ ए ॥

तोहे प्रभु सुनु किछु विनति ।
पिया तेजि हमर न आन गति ॥
ए किन्दर तोहे नाथ हमरे ॥ ध्रु० ॥
नागर तोर तनु कोमल ।
कि कहब जोवन तोहर ॥
मोए नारि तोहरे सोआधिन ।
पिरिति करह जैसे जल मिन ॥

---

१. पाण्डुलिपि में 'कुम' पाठअशुद्धि ।

जगत प्रकाश नृप एहे भान ।
अपुरुब इहु विहि निरमान ॥

हे नाथ ! हमरा ठाम कृपा करु ।

वज्र०—प्रिये ! अवश्य ।

वज्र०—हे प्रिये ! खनेक विश्राम करु ।

प्रेम०—नाथ ! जे आज्ञा ।

(सुनाभ, मंत्री, मत्त साथ दलवन दुंहाय)

(प्रथम कोणे)

सुनाभ—हे मंत्री मत्त ! राजाक दर्शन जाय चलु ।

सर्व—सुनाभ ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

उभौ—हे सुनाभ ! त्वराय चलु ।

सुनाभ—मंत्री मत्त ! चलु ।

सुनाभ मंत्री मत्त—हे दैत्यराज ! हमर प्रणाम ।

वज्र०—हे लोके ! बैसू ।

(हंस, हंसी, नट दवलन दुंहाय)

(प्रथम कोणे)

हंस—हे भद्रनट ! दैत्यराजक स्थान चलु ।

भद्र०—हंस ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

भद्र०—हे हंस ! त्वराय चलु ।

हंस—भद्र ! अवश्य ।

हंसी—हे नटराज ! दैत्यराजक आज्ञा भेल, भीतर आउ ।

नट—हंसी ! अवश्य ।

नट—दैत्यराज ! अपूर्व सिद्धिरस्तु ।

वज्र०—हे नटराज ! कवनो उत्तम नृत्य करु ।

नट०—दैत्यराज ! अवश्य । आज्ञा करु, कवनो नृत्य करब ।

वज्र०—हे नटराज ! रामायण नाचु ।

नट—दैत्यराज ! जे आज्ञा ।

भद्र०—हे शुभनट ! हे चारुनट ! दैत्यराजक आज्ञा भेल, रामायण नाचु ।

उभौ—श्री राम उत्पत्ति ऋक्षशृंगक आगमन नाचु ।

भद्र०—उत्तम ।

धजह् काछब जाउ हमे ऋक्षशृंग । शुभनट, विभाण्डक, चारुनट, लोमपाद राजा, एक मन्त्री, चारिजनि वेश्या, जे वास रहल से होयत ।

उभौ—भद्र ! भल ।

(परिशोधन विहाय)

(राजा मंत्री परिदुंहाय)

राजा—हे दैत्यराज! इहाक आज्ञा भेल, रामायण नृत्यक । तैं रामचन्द्रक उत्पत्ति निमित्त ऋक्षशृंग आनय लागि, लोमपाद राजा काछि हमे अयलाहु ।

वज्र०—हे नटराज ! भल ।

राजा—हे मंत्री ! देव दुर्भिक्ष भेल, प्रजाक पीड़ा भेल, दैवज्ञ सबे कहैछ जओं ऋक्षशृंग एतय आबथि, तओं वृष्टि होय, सुभिक्ष होय. ऋक्षशृंग आनबक उपाय करु ।

मंत्री—हे महाराज ! एकर उपाय अछि, चारि वेश्या पठाउ, से प्रतारि लय आनति ।

राजा—मंत्री ! पठाउ ।

मंत्री—महाराज ! जे आज्ञा ।

मंत्री—हे कामकला, कामकेलि, रतिकला, रतिकेलि ! एतय आउ ।

(मिसा तिपनदु' ॥ मिसा ॥)

महाराज ! हमरा नमस्कार, की आज्ञा ।

राजा–हे कामकला ४ ! तपोवन गय विभाण्डक पुत्र, ऋक्षश्रृंग, अतारि आनु ।

मिसा–महाराज ! जे आज्ञा ।

काम०–हे कामकेलि, रतिकला, रतिकेलि ! राजाक आज्ञाय हमरा सबहि, ऋक्षश्रृंग, श्रृंगार भावे मोहि कय आनब ।

तृतीय–कामकला ! भल कहै छि चलु ।

(परि पिहाय)

राजा–हे मंत्री ! जाव धरि ऋक्षश्रृंग आवत ताय हमरा अन्तःपुर भय रहु ।

मंत्री–महाराज ! अवश्य ।

(परि पिहाय)

(विभाण्डक, ऋक्षश्रृंग परिढुंहाय)

विभाण्डक–हे पुत्र ऋक्षश्रृंग ! तोहे एतय तपस्या करु, हमे वन गय समिध आनय जाइ छि ।

ऋक्षश्रृंग–तात ! जे आज्ञा ।

(विभाण्डक परि पिहाय)

(ऋक्षश्रृंग तपस्या)

(मिसा परि ढुंहाय)

काम०–हे सखी लोके ! भाग्य भेल, ऋक्षश्रृंग देखलाह सुनु ।

तृतीय–कामकला ! कहु ।

(कदंब[1] तल भा)

(आसावरी ॥ चो ॥)

वड़ मुनिराज कयल तप आस ।
एहि सन्ने सम्भाषना करए मोर तरास ॥

---

१. 'कदम्ब' पाठ हेवाक चाही ।

तोर आशा मोर ॥ ध्रु० ॥

अवस करए चाहे अपन नृपकाज ।
सबहु लोके तोहे करु नयन दान आज ॥
इ सब करिते ऋषि आनन्द भेल ।
एहि उपाय हमर वस कइए देल ॥
जगत प्रकाश मेदिनी पति गाव ।
एहे मुनि किछु नहि जान रस भाव ॥

(ऋक्षश्रृंग मिलाकाने)

ऋक्षश्रृंग–हे मुनि लोके ! हमर नमस्कार, भीतर आउ, आसन लियो बैसू ।

मिसा–भल ।

ऋक्षश्रृंग–हे मुनि लोके ! हमर वड़ भाग्य, इहा लोके एतय अयलाह कथनो कारणे से कहु ।

मिसा–ऋक्षश्रृंग ! सुनु ।

सारङ्गी ॥ चो ॥

हम सब भागे तोहे दरसन देल ।
तोर तनु परसैते, पाप दुर गेल ॥
मुनिक कोमल देह सिरिसक फूल ।
तैसन मुनिराज तोहे आसापूर ॥
हमर आसम[1] पर करि हरि सेवा ।
फल मुले अनेके पुजव एह देवा ॥

हे मुनि ! हमरा आश्रम चलु, ओतहि अनेक फल मूले हरिपूजा करव ।

ऋक्षश्रृंग–हे मुनि लोके ! अवश्य जायब, हमर वचन सुनु ।

---

१. आश्रम ।

मिसा—ऋक्षश्रृंग ! कहु ।

ऋक्षश्रृंग—आए देखव ओहे आसम तोर ।
तुअ देह परसन शित भेल मोर ॥
तोहे लोक जे कहय से हमे करव ।
किए हिअ राखल शिरिफल अभिनव ॥

ऋक्षश्रृंग—हे लोके ! हम इहाक चोल करव । हमर संदेह निवृत्ति करु, हमर बाप तपस्वी, इहाय लोके तपस्वी, हमर पिता का बड़ छोड़, इहाय लोक का किछु छोड़ नहि । हमरा बाप का छाति श्रीफल नहि, इहाय लोक का, दुयि-दुयि श्रीफल, ए विशेष कहेन भेल ।

मिसा—हे ऋक्षश्रृंग ! हमरो पूर्ण तपस्या भेल, तकर फल ई फलैछि, इहाक पिता का तपस्या पूर्ण नहि भेल ।

ऋक्षश्रृंग—हे लोके ! हमर अभाग्य, बाप का तपस्या पूर्ण नहि भेल ।

मिसा—हे ऋक्षश्रृंग ! हमर आश्रम चलु, हमहि सन पूर्ण फल तपस्वी अनेक देखव ।

ऋक्षश्रृंग—हे मुनि लोके ! अनेक विश्राम कलु, समय भेल, हमर बाप आगतप्राय ।

मिसा—मुनिपुत्र ! अवश्य । तावत् तपोवन देखै छि ।

काम०—हे लोके विभाण्डक मुनि आगतप्राय, हमरा एतय सञे जाउ ।

तृतीय—कामकला ! भल ।

(मिसा परि विहाय)

(विभाण्डक परि बुहाय)

विभा०—हे पुत्र ! आज किछ, तोहरा मन आन चिन्ता देखै छि, संभावना किछु नहि करै छिह किय ।

ऋक्षश्रृंग—हे पिता ! पूर्ण भेल तपस्वी अनेक आयल छल, ताहि मन लागल ।

विभाण्डक—हे पुत्र ! कओन तपस्वी ?

ऋक्षश्रृंग—हे तात ! छोड़ नहि छाति दुयि-दुयि श्रीफल, अपूर्व नयन तरंग, स्वर मधुर ।

विभाण्डक—हे पुत्र ! विश्वास जनु करिय, ओ सब मायावी राक्षस ।

ऋक्षश्रृंग—तात ! जे आज्ञा ।

(विभाण्डक विश्राम याप)

विभा०—हे पुत्र ! तोहे तपस्या करु, हमे मध्याह्न स्नान करय तीर्थ जाथि छव् ।

ऋक्षश्रृंग—पिता ! जे आज्ञा ।

(विभाण्डक परि विहाय)

(मिसा परि बुहाय)

काम०—हे लोके ! फल बोलि पक्वान्न, तीर्थ जल बोलि मधु, दियो ।

तृतीय—कामकला ! अवश्य ।

मिसा—हे मुनिपुत्र ! हमर आश्रमक फल मूल खाउ, तीर्थ जल पीउ, ई लिउ ।

ऋक्षश्रृंग—हे तपस्वि लोके ! ई अपूर्व फल, अपूर्व जल, कतय होयछ ?

मिसा—हे मुनिपुत्र ! हमरा आश्रम एहने नदी बहैछ, गाछ सबे एहन फलैछ, विलम्ब जनु करु, चलु ।

ऋक्षश्रृंग—लोके ! भल ।

(ओवनितल्ला, मा)

तंड़ी, काको ॥ प्र ॥

काहे थिर किया काहे थिर किया,
थिर किया नाहि, चलो चलो आसम मेरा,
उह थान[1] कए हरि ध्यान ।
उह थान करिए विष्णु ध्यान ॥ ध्रु० ॥

---

१. पाण्डुलिपि मे 'थोन' अछि ।

उह देखि के खुसि होए हरा ।
ए तुमरा भरे मेरे पन्न सारा ।।

(सकलङ विहाय)

(विभाण्डक परि हुंहाय)

(ऋक्षशृंग सोय)

विभाण्डक—हे ऋक्षशृंग ! तीन कतय गेल, हा पुत्र २।।

(मूर्छा, बाड़ाय ध्यान दृष्टि न सोय)

हमे जानल, रामावतार होनिहार भेल, विधाताय ई घटना कयल, भेल, भावी अवश्य होयत ।

(विभाण्डक परि विहाय)

(राजा, मंत्री परि हुंहाय)

राजा—हे मन्त्री ! ऋक्षशृंग कहेने नहि आयलछ ?

मंत्री—महाराज ! ऋक्षशृंग आयल प्राय ।

(मिसा सकलङ परि हुंहाय)

कामकला—हे महाराज ! इहाक आज्ञाय ऋक्षशृंग अनलाहु ।

राजा—हे ऋक्षशृंग ! हमर नमस्कार, विजय कर, हमे अनत लाहु देश रक्षा निमित्ते, हमरा देश रक्षा भेल, इहाय किछु दिन विश्राम करु, इहाके शान्ता नाम कन्या देवि ।

नट—हे दैत्यराज ! ऋक्षशृंगक आगमन धरि नृत्य कयल, आवे की आज्ञा ?

वज्र०—हे नटराज ! धन्य धन्य तोहे लोक, तोहे समान नट त्रिभुवन नहि छय् ।

हंसी—सत्य कहल, ई प्रसाद लोउ, आज हंसी संगे वास जाउ, समवान्तर नृत्य देखय ।

नट—दैत्यराज ! जे आज्ञा ।

(नट हंसी वास वने दवलन विहाय)

(प्रथम कोणे)

नट—हे हंसि ! वास चलु ।

हंसी—नट ! चलु ।।

(द्वितीय कोणे)

हंसी—हे नट ! त्वराय चलु ।

नट—हंसी ! अवश्य ।

वज्र०—हे प्रेमवती, मंत्री मत्त ! तोहे लोके एतय रहह, हमे तालक दर्शन जायब ।

प्रेम०—प्रभु ! विजय करु । हमर प्रणाम ।

(वज्रनाभ, सुनाभ दवलन विहाय)

(प्रथम कोणे)

वज्र०—हे सुनाभ ! तालक आश्रम चलु ।

सुनाभ—दैत्येन्द्र ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

सुनाभ—हे दैत्यराज ! त्वराय चलु ।

वज्र०—सुनाभ ! अवश्य ।

प्रेम—हे मन्त्री मत्त ! अन्तःपुर भय रहु ।

सर्व—दैत्यरानी ! अवश्य ।

(प्रेमवती, मन्त्री मत्त परि विहाय ।।लु१।।)

(प्रभावती वेसारण हुंहाय)

(तिरि बिनु, मा ।।)

नट ।।खर्ज ।।

हम जायब चित्र सदने ।। ध्रु० ।।
एतय सों गृह किछु नहि दूरे ।
धिरे धिरे जायब अपनुक पूरे ।।

(प्रथम कोणे)

प्रभा—हे सखी ! अपन गृह चलु ।
सखी—प्रभावती ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

सखी—हे प्रभावती ! त्वराय विजय करु ।
प्रभा०—सखी ! चलु ।
प्रभा०—हे सखी ! किछु काल एहि थामे रहब ।
सखी—प्रभावती ! अवश्य ।

(हंसी, प्रद्युम्न बथलन दुंहाय)

(प्रथम कोणे)

हंसी—हे प्रद्युम्न ! इहाय[1] एतय रहु, तोहें जे युक्ति आवय पारिय, ते भाँति आवह, हमे प्रभावती लग जाचि छत् ।
प्रद्युम्न—अवश्य ।

(द्वितीय कोणे)

हंसी—त्वराय हमे जायब ।
हंसी—हे प्रभावती ! प्रद्युम्न आयलाहु ।
प्रभावती—हमर भाग्य ।

(मालिनी स्थान जोड़ाव पैसारण दुंहाय)

(मिप ना आई मा)

आसावली ॥ चो ॥

मालती माधवी दमन बकूल,
ई सब लय जायब दानव पूर ।
देखब हमे एहे पुरक शोभा ॥ ध्रु० ॥
फुल राखब हमे प्रभावती पास ।
पूर होयब मोर मन का आस ॥

1. पाण्डुलिपि मे 'हृयाय' पाठ छैक ।

(प्रथम कोणे)

हमे मालिनी ई पुष्पमाला लय प्रभावतीक लग जायब ।
प्रद्युम्न—हमे एहि पुष्प उपल भ्रमरक रूप धरि अन्तःपुर जायब ।

(द्वितीय कोणे)

मालिनि—हमे प्रभावती देखवि ।
मालिनि—हे राजकुमारि ! हमर प्रणाम, इ फूलक माला लियो ।
प्रभा—हे मालिनि ! बड़ उत्तम पुष्प आनल, एतय लहु ।
मालिनि—प्रभावती ! अवश्य ।
मालिनि—हे प्रभावती ! हमरा विदा दिउ ।
प्रभा—मालिनि ! जाउ, ई वस्त्र लिउ ।
मालिनि—प्रभावती ! अवश्य ।

(मालिनि बथलन विहाय)

(प्रथम कोणे)

हमे अपन गृह जायब ।
प्रभा०—हे शुचिमुखी ! एतय आउ, हमर स्थान ।
शुचि०—प्रभावती ! कहु ।

(प्रभावशुचित विरहिनी ॥ राधा, मा ॥)

भथ्यारि ॥ चो ॥

कि भेल प्राण मोरे, धयिरज नहि हमरे ॥ ध्रु० ॥
देखल दिनान्त उगल द्विजराज ।
के विधि सहब हमे आज ॥
एक भमर गाव उत्तम सरे ।
से आव करए उपरे ॥
ए दुहु मिलि प्राण मोर हरि लेल ।
जीवन संकट भेल ॥

सुनह हंसि हमर किछु विनती ।
के होयत मोर गती ॥
एहु रस गाबय प्रकाश भूपती ।
देथि चरण मोर मती ॥

प्रभा०—हे शुचिमुखी ! प्राण संकट भेल ।

शुचि०—भेल होयत ।

(प्रद्युम्न प्रवेश)

शुचि—हे प्रभावती ! जन्हिका लायि तोहर विरह वेदना से प्रद्युम्न एहे ।

(प्रभावती लज्जा बोध)

शुचि०—हे प्रभावती ! ई स्वयं वरमाला प्रद्युम्न के दियौ ।

प्रभा—हंसी ! जे आज्ञा ।

(स्थान मालन कीपाय के)

हंसी—हे प्रभावती, हे प्रद्युम्न ! दुहा दुहु व्यक्ति का उचित संगम भेल, हमे अपन स्थान जायि छन्, अनुज्ञा दियौ ।

प्रभावति, प्रद्युम्न—हे हंसी ! इहाक यत्ने हमरा पूर्ण कामना भेलाहु, स्नेह लाखु, विजय करु ।

हंसी—हे नाथ ! ई वार्ता इन्द्र के कहव, चलु ।

हंस—प्रिये ! अवश्य ।

(हंस, हंसी निस्सार)

(विनोद भमरा, मा ॥)

सारङ्गी ॥ प्र ।

पुरण कयल हम इन्द्रक काज ।
जायब मय आज ॥ ध्रु० ॥

बियाहरि प्रभावती, सुन्दरिक भेल गति ।
दिने दिने दुहुका एकमति ॥

(प्रथम कोणे)

हंस—हे प्रिये ! इन्द्र के ई सब वार्ता कहय ।

हंसी—नाथ ! उचित ।

सखी—हे प्रभावती ! हमे मालाक लग जायब ।

प्रभा०—हे सखी ! ई वार्ता ककरो थाम जनु कह ।

सखी—रानी ! भल ।

(सखी दबलन सिद्धाय)

(प्रथम कोणे)

ई वार्ता रानी के कहव ।

(द्वितीय कोणे)

त्वराय जायब ।

(प्रद्युम्नोचित शृंगार)

प्रद्यु०—हे प्रिये प्रभावती ! हमर वचन सुनु ।

प्रभा—प्राणनाथ ! आज्ञा करु ।

(हमर वचन किछु, मा ॥)

आशावरी, सारङ्गी ॥ चो ॥

बदन पंकज नव नयन खंजन ।
तोहु रामा हरि लेल मोरा मन ॥
जुगल पयोधर स्वयंभु महेश ।
दरशन निमित्ते आएल इ देश ॥
दसन तोहर भेल उत्तम मोति ।
कि कहब हमे एकर जोति ॥
रति रस भाव तोहे सुजान ।
तोहे सनि सुन्दरि न देख आन ।

जगत प्रकाश नृपति एहे बानि ।
गुणवति नागरि अति सयानि ।।

प्रद्यु०—हे प्रभावति ! हमर रतिरस पूर्ण करु ।

प्रभा०—हे प्राणेश्वर ! हहाक अति अद्भुत रूप लावण्य[1], किछु हमे कहै छव्, अवधान करु ।

प्रद्यु०—प्रिये ! कहु ।

(प्रभावत्युक्ति शृंगार)

(कहनिया, मा ।।)

धनाश्री ।। चो ।।

ए पिया तोहे सुन्दर रे ।। ध्रु० ।।

अलप विनति मोर सुनह हे, अरे पहु,
आज मोर दुख दुर गेला ।।
वदन कमल तोर देखर हे, अरे पहु,
से रूप तोहे दरशन देला ।।
तोहर सरूप मय आनर हे, अरे पहु,
दुहु समुचित संग भेला ।।

हे प्रभु ! हमे बड़ पुण्य इहा पवला है ।

प्रद्यु०—हे प्राणप्रिये ! खनेक विश्राम करु ।

प्रभा—प्राणनाथ ! अवश्य ।

प्रद्यु०...हे प्रिये ! वासस्थान जायब ।

प्रभा—हे प्रभु ! हमर नमस्कार, पुनु दर्शन चाहय ।

(प्रद्युम्न परि विहाय)

प्रभा—हमे एहि थाम खन एक विश्राम करब ।

1. पाण्डुलिपिमे 'रावण्य' पाठ छैक ।

(चंद्रावती गुणवती पैसारण दुहाय)

(एमन तुमार, मा ।।)

बराड़ी ।। ए ।।

आयब दुहु प्रभावतिक थाम ।। ध्रु० ।।
अबला जन हुंम अबला तोहे,
अबला पति बिनु केउ नहि सोहे ।।

(प्रथम कोणे,)

चंद्रा०—हे गुणवति ! प्रभावती थाम जायब ।

गुण०—चन्द्रावती ! अवश्य ।

(द्वितीय कोणे)

गुणवती—हे चन्द्रावती ! त्वराय चलु ।

चन्द्रावती—गुणवती ! चलु ।

उभे—हे बहिनि ! हमर प्रणाम ।

प्रभा०—अभिमत स्वामी पावह ।

प्रभा०—हे बहिनि ! दुहु एतय आउ ।

उभे—बहिनि ! अवश्य ।

इति द्वितीयाङ्क ।

अथ तृतीय दिवसे ॥

(प्रभावती, गुणवती अलंकारण दुहाय)

प्रभा०—हे बहिनि ! अनेक विश्राम कय।

उभे—बहिनि ! अवश्य।

(प्रभावती शोय)

चन्द्रावती—हे गुणवती ! प्रभावती चेष्टा विपरीत भेल, कवनो पुरुप प्रवेश भेल।

गुण०—चन्द्रावती ! भल कहै छि, चलु, हमराहु विनतो कलब।

चन्द्रा०—अवश्य।

उभे—हे प्रभावती ! हमर गोचर सुनु।

प्रभा०—चन्द्रावती, गुणवती ! कहु।

(दुलो धारि प्राण, मा ॥)

धुरिया मल्लार १ वो ॥

हमे अभागिनि नारी, तोहे भाग्यमान ॥ घ्रु० ॥
तोहर चरित्र हमे देखर आन रे,
आलस तनु तोर सोभावे मय जान ॥
ई कलश भगए कएल कत्रेने,
अधरत्रे कएल पान ॥

हे बहिनि ! पुनु हमरा गोचर सुनु।

प्रभा०—चन्द्रावती, गुणवती ! कहु।

(अरे हो ऐसे, माझ मना, मा ॥)

तोड़ि ॥ गर्ज ॥

सुनु तोहे दुहुक बानि
विरह दाढ़ल मन मोर ॥ घ्रु० ॥

तोहरा भेल पति, देखल उत्तम रिति
मोर नहि भेल गति, करहु तोहे निति।

उभे—हे बहिनि ! हमर दुहुक गति चितु।

प्रभा०—भल होयत सुनु।

उभे—प्रभावति ! कहु।

सुनु साजनि मोर बानी, काज कए देव हमे तोहरे ॥
करब मए जुगुति जनु संकह मति,
कर तोहे भुगुति अवस होयत गति ॥

प्रभा०—हे चन्द्रावती, गुणवती ! चिंता जनु करिय, इहाहुक स्वामी कए देव।

उभे—प्रभावती ! अवश्य।

प्रभा०—हे बहिनि, तोहरा दुहु व्यक्ति के एहन विद्या देयि छथ् जे तोहर कामना पूर्ण होयत।

उभे—इहाक प्रसाद चाहिय।

प्रभा०—हे बहिनि ! सुनु।

उभे—प्रभावती ! कहु।

(प्रभावतुचित गीत)

(नयन तरप दार मा ॥)

मल्लार ॥ ३ ॥

दुहुक जीवन भार, हो नारि, विद्या देल मोए तोहरा के ॥ घ्रु० ॥
करहु तोहे विद्याक ध्यान, पूर होय तोहरे काज।
करु वेश विन्यास आज ॥

प्रभा०—हे बहिनि ! विद्या लेहु।

उभे—इहाक कृपाय पावल, अवे हम पूर्ण कामना भेलाहु।

(प्रद्युम्न परि ववलन दुहाय)

हे प्रिये प्रभावती !

प्रभा०—हे प्रभु ! हमर नमस्कार। हे प्रभु ! ई दुहु जनि हमर बहिनि इहाक प्रणाम करैछ।

प्रद्युम्न—प्रभावती ! उचित।

प्रभा—हे बहिनी ! हमरा नाथ के प्रणाम करु।

उभे—प्रभावती ! अवश्य।

उभे—हे ठाकुर ! हमर प्रणाम।

प्रद्युम्न—पूर्ण काम होव।

प्रभा०—हे नाथ ! हमरा थाथि कृपा कयल, ई दुयि व्यक्तिक के पति होयत से विचार करु।

प्रद्युम्न—हे प्रभावती ! चन्द्रावति का गद स्वामी, गुणवती का शाम्ब स्वामी।

प्रभा०—नाथ ! उचित।

प्रद्युम्न—हे गद, शाम्ब ! एतय आउ।

(गद शाम्ब पैसारण दुहाय)

(गावि ए निको संगे, मा ॥)

रामकरी ॥ प्र ॥

कि कहल परदुम्न जायब दुहु मिलि ॥ ध्रु० ॥
थिर न करि वेगे चलहु आज।
कएल आमन्त्रण की भेलहु काज ॥

(प्रथम कोणे)

गद—हे शाम्ब ! कथि लागि प्रद्युम्न बजवूलाहु।

शाम्ब—जानि नहि होयि अछ।

(द्वितीय कोणे)

शाम्ब—हे गद ! वेगे चलु।

गद—शाम्ब ! चलु।

गद—हे प्रद्युम्न !

प्रद्युम्न—हे गद ! हमर नमस्कार।

गद—कल्याण होव।

शाम्ब—हे प्रद्युम्न ! हमर नमस्कार।

प्रद्युम्न—शुभ होथ।

प्रभा—हे प्रद्युम्न ! को निमित्त आज्ञा कयर।

प्रद्युम्न—हे गद ! इहाय चन्द्रावती विवाह करु। हे शाम्ब! इहाय गुणवती विवाह करु। ई निमित्त आह्वान कयल।

उभौ—अवश्य करब।

प्रद्युम्न—हे प्रभावती ! चन्द्रावती गद के, गुणवती शाम्ब के देउ।

प्रभा०—प्रद्युम्न ! अवश्य।

प्रभा०—हे चन्द्रावती गुणवती ! दुहु जनि दुहु व्यक्ति के पुष्प माल दियो

उभौ—प्रभावती ! भल।

(उभे, स्वान मालन कोखाप के)

प्रद्यु०—हे गद ! तोहरा दुहु जनि, एतय रहु, हमे पुष्पवाटिका जायब।

गद—प्रद्युम्न ! जाउ।

प्रद्यु०—हे शाम्ब ; पुष्पवाटिका जायब।

शाम्ब—प्रद्युम्न ! अवश्य।

(प्रद्युम्न, शाम्ब, प्रभावती, गुणवती दवलन विहाय)

(प्रथम कोणे)

प्रद्युम्न—हे शाम्ब, प्रभावती, गुणवती पुष्पवाटिका चलु।

सर्वे—प्रद्युम्न ! चलु।

(द्वितीय कोणे)

शाम्ब—हे प्रद्युम्न ! इहा लोके पुष्पवाटिका जाउ, हम अपना थान जायब।

(साम्ब, गुणवती दवलन विहाय)

प्रभा०—हे प्रभु, तोलित विजय करु।

प्रद्यु०—प्रिये ! चलु।

(गदोक्ति शृंगार)

हे प्रिये ! इहाक एप जौवन किछु कहै छी सुनु।

चन्द्रा०—नाथ ! कहु।

(ए सखि, मा)

विभास ।। एताल ।।

मृगनयनि तोहे अति तरुनि ।।
तोहे देखि मुगुधए महामुनि ।।
कुच जुग तोहर हेम कलेश[1] ।
तसु परसने दुर होय कलेश ।।
जनु मारह रामा कुसुमवान ।
सुमने देह आलिगन दान ।।
जगत प्रकाश धरणिपति भान ।
ई नारिक आन नहि समान ।।
की कहब रे, टेक ।।

गद—चन्द्रावति ! हमर मन, सानन्द करु।

(चन्द्रावत्युक्ति शृंगार)

चन्द्रा०—हे नाथ ! मोरा निवेदन सुनु।

गद—प्रिये ! कहु।

(केशरीक, मा)

आसावरी काफी ।। प्र ।।

पहु बिनु अवला केउ नहि सोभ ।
तोहे देखि कओन जुवति नहि लोभ ।।

---

१. कलश।

मुगुधा नारि भाव नहि जान ।
त्रिभुवन नहि तोहर उपमान ।।
मधुर वचन तुअ अमिय समुद ।
तोर मुख कि कहब अति अदभुद ।।
प्रकाश नृपति भन रघुपति कूल ।
जदुकुल गद रतिरस परिपूर ।।

हे प्रभु ! हम इहाक अधीन।

गद—हे प्रिये ! खन एक विश्राम करु।

चन्द्रा०—नाथ ! अवश्य।

गद—हे चन्द्रावती ! प्रद्युम्न निकट चलु !

चन्द्रा०—नाथ ! विजय करु।

(गद, चन्द्रावती दवलन विहाय)

(प्रथम कोणे)

गद—हे प्रिये ! दवराय ओतय चलु।

चन्द्रा०—नाथ चलु।

(द्वितीय कोणे)



चन्द्रा०—हे प्रिये ! शीघ्र विजय करु।

गद—प्रिये ! चलु ।। लु १२ ।।

(कश्यप, शिष्य प्रवेश)

(साजन आय मा)

काफी, धनाश्री ।। चो ।।

आयरा कश्यप मुनिराज,
रङ्गभूमि देखह शिष्य तोहे आज ।।
मोए उत्तम मुनि ।। ध्रु० ।।

कश्यप—हे सुबोध, हे प्रबोध ! हमर वचन सुनु।

उभौ—गुरु ! आज्ञा करु।

(श्लोक)

सरसिजाननशासनमादृतः समधिगम्य जगत् क्रमतोऽसृजम् ।
सनकवृन्दसदः प्रविशाम्यहं मुनिवरः प्रमना इह कश्यपः ॥

हे सुबोध, प्रबोध ! एतादृश कश्यप हमे ।

उभौ—मुनिराज ! सत्य ।

सुबोध—हे गुरो ! हमर गोचर किछु सुनु ।

कश्यप—सुबोध ! कहु ।

(श्लोक)

अहं सुबोधः प्रतिपन्नबोधः श्रीकश्यपादिष्टतया महर्षेः ।
विशामि रंगं ललितातिरंगं, पानीयजन्मेव सहस्ररश्मेः ॥

हे गुरो ! एहन सुबोध हमे ।

कश्य०—भल[1] ।

प्रबोध—हे मुनीश्वर, हम किछ कहै छथ् ।

कश्य०—प्रबोध ! कहु ।

(श्लोक)

गुरोः पदद्वन्द्वकृतप्रबोधः प्रबोधनामा मुनिवृन्दवन्द्यः ।
विशामि हर्षादहमीशभक्तियुक्तो नटस्थालयमस्तदोषः ॥

हे गुरो ? एतादृश प्रबोध हमे ।

कश्य०—सत्य ।

कश्य०—हे सुबोध, प्रबोध ! विश्राम करु ।

उभौ—हे गुरो ! अवश्य ।

(वज्रनाभ, सुनाभ पंसारण दुहाप)

(चल चल सुखवनि, मा)

पहड़िया ॥ परिमान ॥

चल चल सुनाभ तातक पाशे ।
पिताक चरण देखि पापक नासे ॥

१. पाण्डुलिपि मे 'भए' पाठ छैक ।

(प्रथम कोणे)

वज्र०—हे सुनाभ ! मुनिक आश्रम चलु ।

सुनाभ—वज्रनाभ ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

सुना०—हे दैत्यराज ! त्वराय चलु ।

वज्र०—सुनाभ ! चलु ।

वज्रनाभ, सुनाभ—हे तात ! हमर प्रणाम ।

कश्यप—आयुष्मान् भव । हे वत्स ! एतय बैसु ।

उभौ—तात ! अवश्य ।

कश्यप—हे वत्स ! कओन कार्य एतय आयलाह ?

वज्र०—हे तात ! इहाक प्रसादे सकल पूर्ण भेल, इहाक आज्ञा होय तौ
राजसूय यज्ञ करिय ।

कश्यप—हे पुत्र ! जनु करह, संपन्न नहि होयत, इन्द्र बड़ तोहरा बैरी,
त्वराय घर जाह ।

वज्र०—तात ! जे आज्ञा । हमर प्रणाम ।

(वज्रनाभ, सुनाभ दबलन विहाय)

(प्रथम कोणे)

वज्र०—हे सुनाभ ! मुनिक आज्ञा भेल, घर जायब ।

सुनाभ—प्रभु ! अवश्य ।

(द्वितीय कोणे)

सुनाभ—दैत्यराज ! घर चलु ।

वज्र०—सुनाभ ! चलु ।

(ब्राह्मण, ब्राह्मणी पंसारण दुहाप)

मल्लार ॥ चो ॥

सुनो रचना वशारिनिया ॥ ध्रु० ॥
तन्ने बिन न सोहाओ मय तेरे गुण गाव,

तेरे रुप देखि के लागा मन मेरा ॥
करो हम सोँ भाव तेरे चुम्बन थाम्रे[1],
दह समय वोरे[2] सुनो तोँ न करे[3] तेरा ॥

(प्रथम कोणे)

ब्राह्मणी—हे नाथ ! पुत्र मागब ।
ब्राह्मण—कश्यप सेवा कय पुत्र मागब ।
ब्राह्मण, ब्राह्मणी—हे कश्यप ! हमर नमस्कार ।
कश्यप—अभीष्ट लाभ होव ।
कश्यप—हे ब्राह्मण ! कश्रोन कामनाये हमर धाम आयला ह ?
ब्राह्मण—हे ऋषीश्वर ! हमरा वार्द्धक भेल । एतहु दिन पुत्र नहि भेल, से मागय आयलाहु ।
कश्यप—अवश्य वहा का पुत्र होयत, हमर दर्शन सफल होयत, अपने घर जाउ ।
ब्राह्मण—हमर नमस्कार ।

(प्रथम कोणे)

ब्राह्मण—हे प्रिये ! घर जायब ।
ब्राह्मणी—नाथ ! अवश्य ।

(द्वितीय कोणे)

ब्राह्मणी—हे नाथ ! सानन्द भेलाहु, मुनिराज वल[3] देल ।
ब्राह्मण—हे प्रिये ! हमरा भाग्य ।

(कश्यप शिष्य निस्सार)

(अज वक खोर, मा)

काफी ॥ चौ ॥

हमे करव ईशक ध्यान,

१. बोल ।
२. फल ।
३. वर ।

ई छाड़ि आन न जान ॥ ध्रु० ॥
चलह शिष्य जाएब तपोवन ।
शिष्यक चरण एक मोर धन ॥

(प्रथम कोणे)

हे सुबोध प्रबोध ! तपस्या करय ।
उभौ—गुरु ! अवश्य ।

(द्वितीय कोणे)

उभौ—हे गुरु ! तपोवन विजय करु ।
कश्य०—सुबोध, प्रबोध ! चलु ॥ लु १३ ॥

(शाम्ब, गुणवती बकलाग दुहाग)

(प्रथम कोणे)

शाम्ब—हे प्रिये ! शृङ्गार मण्डप चलु ।
गुण०—नाथ ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

गुण—हे प्रभु ! शृङ्गार मण्डप देखय हमरहु वड़[1] उत्कंठा ।
शाम्ब—प्रिये ! चलु ।
शाम्ब—हे प्रिये ! ई रमणीय स्थान, विश्राम करु ।
गुण०—नाथ ! अवश्य ।
शाम्ब—हे मृगनयनि मुग्धे ! हमर विनति सुनु ।
गुणव—नाथ ! आज्ञा करु ।

(शाम्बोक्ति शृङ्गार)

(क्याङ्गा, मा)

भोपालि ॥ चौ ॥

गुणवति तोहे सब गुण परिपूर ।
मोहि हृदय सत्रे जनु कर दूर ॥

१. बड़ ।

कोमल कर तुत्र किसलय भास ।
चारु जौवन तोर मदन विलास ॥
दरशन देहु तोहे सरदक चन्द ।
देखि वदन होग्र मन सानन्द ॥
न कर न कर धनि प्राणक नास ।
विनति एहे मोर तोहरे पास ॥
जगत प्रकाश नृप कह ग्रोहे बाला ।
शाम्ब कएलक हृदयक हारा ॥

शाम्ब—हे गुणवती ! तोहर गुण की कहब !
गुण०—हे प्राणनाथ ! हमर हृदय वेदन सुनु ।
शाम्ब—प्रिये ! कहु ।

(गुणवत्युक्ति शृङ्गार)
(कुबरी देह, मा)
कोराव ॥ प्र ॥

तोहर वचन सुनि जीव मोर कपयी ।
दुरदक भार नलिनि नहि सहयी ॥
हमे अति बालि तोहे वर तरुना ।
पहु मोहि देखि नहि किए कर करुना ॥
हठ जनु करह सुन्दर नागर ।
तुत्र कर परसे होग्र हिय कातर ॥
जगत प्रकाश नृपति एहो गावए ।
जे बुध जन होए सेहे रे पावए ॥

हे नाथ ! अवसर सब रमणीय ।
शाम्ब—हे प्रिये ! खन एक विश्राम करु ।
गुण०—नाथ ! अवश्य ।

(प्रद्युम्न, प्रभावति, वेतारण दु हाथ)
(मन्द नन्दन, ॥ मा ।)
सारङ्ग ॥ प्र ॥

एहन नारी तोहु हमरा पालि ॥ ध्रु० ॥
सुन्दरिक मुख देखि जाएब शाम्ब पास ।
हमे कएल रमनि तोहे रति आस ॥

(प्रथम कोणे)

प्रद्यु०—हे प्रिये ! शाम्ब देखय जायिबा ।
प्रभा०—प्रभु ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

प्रभा०—हे प्रभु ! त्वराय विजय करु ।
प्रद्यु०—प्रिये ! चलु ।
शाम्ब, गुणवती—हे प्रद्युम्न ! हमर प्रणाम । एतय विजय करु ।
प्रद्युम्न—शाम्ब ! अवश्य !

(गद चंद्रावती ववलन दु हाथ)
(प्रथम कोणे)

गद—हे चन्द्रावति ! प्रद्युम्न देखय जायब चलु ।
चन्द्रा०—नाथ ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

चन्द्रा०—हे प्रभु ! प्रभावती पास जायब ।
गद—प्रिये ! चलु ।
गद—हे प्रद्युम्न !
प्रद्युम्न प्रभावती, शाम्ब, गुनवती—हे गद ! हमर प्रणाम ।
गद—शत्रु नाश होव ।
प्रद्यु०—हे लोके ! अन्तःपुर भय रहु ।
सर्वे—अवश्य ।

(प्रद्युम्नादि परि विहाय)

(दैत्यरानी, मन्त्री परि दुहाय)

हे मन्त्री ! दैत्यराज की नहि आयल छथि ?

मन्त्री—हे महारानी ! दैत्यराज आवता ।

(सखी बदलन दुहाय).

(प्रथम कोण)

रानीक लग हमें जायब ।

(द्वितीय कोण)

सखी—त्वराय जाएब ।

सखी—हे रानी ! हमर प्रणाम ।

रानी—सखी एतय आउ ।

सखी—रानी, अवश्य ।

सखी—हे रानी ! कन्यापुर कओनहु पुरुषक प्रवेश भेलछ, से बुझु

रानी—सखी ! बुझब ।

(वज्रनाभ, सुनाभ पैसारण दुहाय)

ज्याड़ा ॥ मा ॥

मालश्री ॥ चो ॥

चलु भाय सुनाभ, अपनुक सदने ।

ओ घर देखय के भेल मोर मने ॥

(प्रथम कोण)

वज्र०—हे सुनाभ ! नगर अयलाहु ।

सुना०—लोक विमन सन देखै छी ।

(द्वितीय कोण)

सुनाभ—हे वज्रनाभ ! घर त्वराय चलु ।

वज्र०—सुनाभ ! चलु ।

वज्र०—हे प्रिये !

रानी—हे नाथ ! हमर नमस्कार, विजय करु ।

वज्र०—प्रिये ! अवश्य ।

वज्र०—रानी ! कुशल ?

रानी०—हे प्रभु ! सब कुशल, एक वार्त्ता अकुशल ।

वज्र०—ह ! ह ! की अकुशल ?

रानी—कन्याक अन्तःपुर कओन पुरुष प्रवेश भेल ।

वज्र०—हे सुनाभ, मन्त्री मत्त, बड़ साहसी कओ थिक, साज कय चलहू, मारब ।

सुनाभ—अवश्य ।

वज्र०—हे प्रेमवती ! तोहरा एतय रहु, हम वैरी मारय जायब ।

प्रेम०—प्रभु ! विजय करु, हमर प्रणाम ।

(वज्रनाभादि भाग बदलन विहाय)

(प्रथम कोण)

वज्र०—हे सुनाभ ! तोराय चलु ।

सुनाभ—वज्रनाभ ! चलु ।

(द्वितीय कोण)

सुनाभ—हे दैत्यराज ! वैरि मारब चलु ।

वज्र०—सुनाभ ! चलु ।

प्रेमवती—हे सखी ! अन्तःपुर भय रहु ।

सखी—रानी ! अवश्य ॥ लु १५ ॥

(प्रद्युम्नादि परिदुहाय)

प्रद्यु०—हे लोके ! वज्रनाभ नगर अयिलाह, युद्ध अवश्य होयत, हमरहु सुसज्ज सबहि होउ ।

सर्वे—सुसज्ज छी ।

(वज्रनाभादि बदलन दुहाय)

(प्रथम कोण)

वज्र०—हे सुनाभ ! कन्यागह जायब ।

सुनाभ—दैत्यराज ! भल ।

(द्वितीय कोणे)

सुनाभ—हे दैत्यराज ! वैरि देख ।
वज्र०—अवश्य देखब ।

(धना हवके)

रे रे पुरुष ! के थिक ? एतय कि आयल छी ?
प्रभा—हे प्रभु ! वज्रनाभ ई सब वार्ता जानल, मोरा त्रास बड़, की होयत सुनु ।

(प्रभावत्युचित भयानक ॥)

(माला हरि बिनु, मा ॥)

बेहाकला ॥ प्र ॥

की होयत जीव मोरे,
ई सब सुन हमर प्राण थल थल कांपे ॥ ध्रु० ॥
सुनल हमे अनेक घोर सोर ।
से सुनि अधिक तरास भेल मोर ॥
ई सब सुनि कए आयलहु तात ।
मोर उधार न करए अपन मात ॥
अवस करए इ नाथक नास ।
हमहु करब तञो पहु संगे पास ॥
जगत प्रकाश नप ई रस गाव ।
चण्डी सेवा बिनु गति नहि पाव ॥

प्रभा०—हे प्राणनाथ ! की उपाय करब ?
प्रद्यु०—हे प्रिये ! त्रास जनु करिए, हमे एक क्षणे सबहि मारब, किन्तु संबंध भेल, ते मारयिते संकोच होयिछ ।
प्रभा०—हे नाथ ! अपन जीवन रक्षा करु, ई अमोघ अस्त्र हमरा बाप के ब्रह्मा देल, ई लियौ, अपन प्राण रक्षा करु ।

प्रद्यु०—भल, जे इहाक अभिमत ।

(वज्रनाभ हवके ॥ प्रद्युम्न, गद, शाम्ब पेथ ॥)

प्रभा०—हे चन्द्रावती, गुणवती ! अन्तःपुर भय रहु ।
उभे—अवश्य ।

(प्रभावती, गुणवती परि विहाय)

सुनाभ, मन्त्री—रे रे पुरुष ! के तोहरा थिक ?
गद—हमरा जादव, हम कृष्णक भाय वसुदेव पुत्र, ई कृष्णक पुत्र प्रद्युम्न, शाम्ब ।
सुनाभ—तोहे गवार, राजाक अन्तःपुर पैसर छह, आबे कतय जाय छह? मारब हे सुनह ।
गद—सुनाभ ! कहु ।

(परम हरिते, मा ॥)

पहड़िया ॥ ए, प्र ॥

तोहे गद शाम्ब अलप बुधि तोहु रे ।
पलटि जाहु दुहु हमर दरे ॥ मेभासा ॥

हे गद ! तोहु सबहि जीय लेय जाहु ।
गद, शाम्ब—हे सुनाभ ! गर्व जनु करहु, हमर वचन सुनहु ।
सुनाभ—गद ! कहु ।

(गदोचित)

अरे सुनाभ हम सों कि कर गुमान ।
अबे मारबाह हमे तोहे नहि जान ॥ मोध के ॥

वज्र, मन्त्र—हे प्रद्युम्न, थाड़ होय, अब कतय जाय छह ?
प्रद्यु०—हमे थाढ़ छय् ।

(कारि धरिप, मा ॥)

प, रि, ए, प्र ॥

परदुमन तोहे किंचित मानुषे ।
मोर आशा बिनु पुर रहलाहे सुखे ॥ मेभासा ॥

हे प्रद्युम्न ! अल्प मानुस तोहें, हम सोट नहि पारब ।

प्रद्यु०—हे वज्रनाभ ! तोहु देव मानव गंधर्व सबक बैरी, अवश्य मारबाहे हमे, सुनह ।

वज्र०—प्रद्युम्न ! कहु ।

(प्रद्युम्नोक्ति)

तोहु मारए एहि रहलाव पूर ।
तोहर काय सो प्राण करब मोए दूर ।। मेभासा ।।

हे वज्रनाभ ! एहि खन मारिबाहथ ।

वज्र०—हे प्रद्युम्न ! तोहे हम मारबहु, तोहर बाप कृष्ण से नहि हमे मारय पार्ता हे ।

प्रद्यु०—हे वज्रनाभ ! हमर बाप कृष्ण से आयलाह, हमे तोहु मारबाहे

(कृष्ण, सारण बबसन दुहाय)

(प्रथम कोणे)

कृष्ण—सारण ! जुद्ध देखब ।

सारण—अवश्य देखब ।

(द्वितीय कोणे)

सारण—हे प्रभु ! त्वराय चलु ।

कृष्ण—सारण ! चलु ।

प्रद्यु—हे तात ! हमर नमस्कार ।

कृष्ण—शत्रु जिनु ।

प्रद्यु०—हे तात ! भल भल, एतय विजय कयल अपने ।

कृष्ण—हे पुत्र ! ई सारङ्ग धनु लियो, शत्रु मारि देवता सबक सानन्द करु ।

प्रद्यु०—तात ! इहाक आशिषे सब होयत ।

वज्र०—हे प्रद्युम्न ! तोहु कतय जाय, एखने मारब, सुनु ।

प्रद्यु०—दानव ! कहु ।

वज्रनाभ हमे कि करब, तोहे काज ।
दानव तोहु जमपुरि पठाओब आज ।। मोद के ।।

(भूत परि दुहाय)

(श्याम दरायलो, मा)

तोड़ि, वसन्त ।। चो ।।

मुदिते नाचल भूत डाकिनि परेत पिशाचे ।। ध्रु० ।।
करेज आंत मासु खाए काचे काचे ।
इ खाए के आनन्द ते नाचे ।।
इ सबे पिबए लोहु, डाकिनि लोक ।
हाथ पाव खाए गृध थोक ।।

(वैस्यरानी, सखी परिदुहाय ।)

वैस्यरानी—हे सखी ! कोराहल[1] सुनयि छी ।

सखी—जुद्ध होयिछि ।

(वैस्यरानी न सोय ।। शिव, शिव)

(आलिगन मा)

मरहथि ।। लाजति ।।

शिव शिव पहु के ई गति भेल ।
मोरा रतन दैव हरि लेल ।।
जे हमे मागल सब प्रभु देल ।।
ऐसने प्राणनाथ अबे दुर गेल ।।
एहन पति सों भेल वियोग ।
नासव तनु हमे चिन्तव योग ।।
जगत प्रकाश नृप एहे गाव ।
हरि सेवा ते निक धाम पाव ।।

वै०—हे प्राणनाथ ! की अवस्था ?

---

१. कोलाहल ।

(मूर्छा गायन, नट्ठ काप)

प्रद्यु०—हे प्रभावती, चन्द्रावती, गुणवती ! एतय आउ ।

प्रभावती चन्द्रा० गुण०—हमर नमस्कार ।

हे ईश्वर ! हमर प्रणाम ।

कृष्ण—हे गद, सारण ! प्रद्युम्न के ई राज्य अभिषेक करु ।

गद, सारण—एहन उचित ।

(प्रद्युम्न राज्याभिषेक ॥ ज्वाड़ा, मा ॥)

भैरवी ॥ ए ॥

मारल असुर देव सबक भेल सुख, तोहे कए उत्तम काजे ।
जावत भानु रह होउ ठाकुर एहे लेउ बैरिक राजे ॥

सर्वे—जावत् धरि चाद सूर्य तावत् धरि इहाय राजा, एहि वज्रपुरे ।

सर्वे—तथास्तु ।

कृष्ण—हे लोके ! देव कार्य भेल, द्वारिका चलु ।

सर्वे—नाथ ! अवश्य ।

(कृष्णादि निस्सार)

(न्यो पारान, मा ॥)

तोड़ि ॥ ए ॥

ई हमे जान पुरदुमनका जनम कृतारथ भेला ॥ ध्रु ॥
वज्रनाभ असुर मारि लेल सुन्दरि, इ दानव सब देखि नहि भीति ।
हरख चलह अब द्वारिका पुरि, सुत कएल निक किरति ।

(प्रथम कोणे)

कृष्ण—हे लोके ! पूर्ण मनोरथ भेल, द्वारिका चलु ।

सर्वे—नाथ ! विजय करु ।

(द्वितीय कोणे)

सर्वे—ईश्वर ! शीघ्र विजय करु ।

कृष्ण—लोके ! चलु ॥ लु १६ ॥

(रुक्मिणी, सत्यभामा परि दुंहाय)

रुक्मि०—हे सत्यभामा ! ईश्वर प्रद्युम्न ई प्रभृति कहिया आवत ?

सत्य०—हे रुक्मिणी ! मोर सगुण भेल, आयल प्राय ।

(कृष्णादि बवलन दुंहाय)

(प्रथम कोणे)

कृष्ण—हे लोके ! द्वारिका जायब चलु ।

सर्वे—ईश्वर ! विजय करु ।

(द्वितीय कोणे)

सर्वे—हे ईश्वर ! द्वारिका आयिलाहु ।

कृष्ण—लोके ! उत्सव करु ।

कृष्ण—हे रुक्मिणी, सत्यभामा !

रुक्मिणी, सत्यभामा—हे प्रभु हमर नमस्कार । एहि आसन विजय करु ।

कृष्ण—प्रिये ! अवश्य ।

प्रभा०, चन्द्रा०, गुण०—हे ठकुरायिनि । हमरा नमस्कार ।

कृष्ण—हे प्रिये ! ई प्रद्युम्नक पत्नी प्रभावती, ई गदक पत्नी चन्द्रावती,
ई शाम्बक पत्नी गुणवती, संभाषणा करु ।

रुक्मिणी—हे प्रभावती, चन्द्रावती ! एतय आउ ।

सर्वे—माता ! अवश्य ।

कृष्ण—हे लोके ! हम ईश्वर भक्त करब ।

सर्वे-ईश्वर ! जे आज्ञा ।

(कृष्णोचित शान्ति रस ।)

(श्याम बंधु मा ॥)

गौरी पंचम ॥ चां ॥

मन हमरा एहि भेला ॥ ध्रु ॥
हमे सब जानल संसार असार, सार एक शिव नाम ।
महेशक शिरे गंगाजल धार, एहि सेवि नहि होए बाम ॥

शिव पद सेवए के न कर विचार हम सेवय एहि ठाम।
प्रकाश नृपति कहे, तोहे अधार, पूरह मनक काम ॥

कृष्ण—हे रुक्मिणी, सत्यभामा ! ईश्वर भक्त पय सार।

उभे—ईश्वर ! सत्य।

कृष्ण—अतः पर देव कार्य कयल, आब की कर्त्तव्य ?

प्रद्युम्नावि—सब समीहित सिद्ध भेल, अतः पर ई होअ।

(प्रद्युम्नोचित श्लोक)

काले वर्षतु वासवो वसुमती शस्यादिपूर्णाभवे—
वास्तां भूपतिरेव नित्यविजयो यावद्ग्रहाधीश्वरम् ।
यावत्तिष्ठति जाह्नवी हरजटाजूटे समुज्जृम्भतां,
तावद्वीरजगत्प्रकाशनृपतेः कीर्त्तिः कवित्वोज्वला ॥

सर्वे—सर्व्व सिद्धि होअव।

प्रद्यु—हे लोके ! ईश्वरीक भक्त करु।

सर्वे—अवश्य।

(शिवनाम मा ॥)

पंचम झुमरि ॥

कृपा करहु जगत जननि माता।
तोहे भवानि सब लोक का धाता ॥
खोन सेवक हमे देखि कर करुना।
कि कहव माता मोए तोहर गुना ॥
जगत्प्रकाश नृपति कर विनती।
जनम जनम होउ तोर पद मती ॥

इति श्रीश्री जयजगत्प्रकाशमल्लकृतं प्रभावतीहरणनाम नाटकं समाप्तम् ॥

नेपालाब्दे रसार्णवाश्वे, गणिते कामदासरे,
आषाढ़े बहुले पक्षे, ग्रन्थः संपुर्णतामगात।

